International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विदर्भ में सिंचन व्यवस्था (जिलानिहाय)

डॉ.अर्चना बी. जैन
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
न.मा.द. कला, वाणिज्य कॉलेज,
गोंदिया. (जि.गोंदिया)

सारांश :

जल ही जीवन है। यह सभी प्राणी, वनस्पती, पक्षीयों के लिए आवश्यक है। इसलिए पानी का उपयोग किफायत से करना होता अन्यथा भविष्य में पानी के लिए विश्वयुध्द होने की पूर्ण संभलना है। आज देश के अंतर्गत विविध प्रदेशों में पानी बंटवारे पर विवाद शुरू है। चाहे वह कावेरी विवाद हो या खेज नहर विवाद। जलसिंचाई की सुविधा पर कृषि उत्पादकता निर्भर होती है। इसके लिए नियोजनबध्द तरीके से जलसिंचाई की सुविधा उपलब्ध करवाना, पानी के अपत्यय को टालना शासन व जनता के कर्तव्य भावना से काम किया तो जलसिंचन सुविधा का विस्तार होकर विदर्भ में सुख व समृध्दी निर्माण की जा सकती है। जलसिंचाई सुविधा में प्रादेशिक असमानता जो दिखायी दी है उसे कम करना होगा। चालुसिंचन प्रकल्प व भाव पथकालीन सिंचन प्रकल्प इन दोंनो का अंदाज लेकर समिती ने राज्य का कुल अनुशेष 1380 करोड के निकाला है। इसमें कोकण, विदर्भ, मराठवाडा इनका 950 करोड का अनुशेष जो तकरीबन 61 प्रतिशत है।

कृषि को मानसून का जुँआ कहा जाता है। यदि कृषि का चहुमुखी विकास करना होगा तो उसके लिए सर्वप्रथम सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवानी होगी। कृषि व्यवसाय की प्रमुख समस्या ही है। यदि पानी उपलब्ध हो जाता है तो कोईभी किसान दो फसल लेने से सक्षम हो सकता है। ग्रामीण विकास के लिए भी आवश्यक घटक कृषि को माना गया है। व कृषि विकास सिंचाइ सुविधा पर निर्भर होता है। महाराष्ट्र देश का विकसित व उद्योग प्रधान राज्य होने से वहॉ संतुलित विकास की कल्पना साकार करना आवश्यक है।

प्रस्तावना :

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का विशेष स्थान रहा है। अर्थात् भारतीय अर्थ व्यवस्था कृषि प्रधान है। इसलिए अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कृषि का विकास होना जरूरी है। यदि कृषि क्षेत्र पिछडा रह जाता है तो अन्य क्षेत्रो का भी विकास संभव नही है। आज भारत की 70ः जनसंख्या कृषिक्षेत्र पर निर्भर है। भारत सरकार ने पंचवार्षिक योजना के माध्यम से देश के विकास के लिए आधारभूत सुविधा पर विशेष ध्यान दिया है। जिसमें परिवहन सुविधा, उर्जा, सिंचाई आदि पर अधिक जोर दिया गया है। भारत में खेती को मानसून का जुगार कहा गया है सिंचाई सुविधा की बात करे तो केवल 40ः भूक्षेत्र पर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। भारत में विविध राज्यों मे सिंचाई सुविधा में असमानता दिखलायी देती है। पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, गुजरात इन राज्यों में सिंचाई सुविधा का विकास अधिक हुआ है। महाराष्ट्र राज्य मे क्षेत्रीय विषमता दिखलायी देती है। पश्चिम महाराष्ट्र, खानदेश में सिंचाई सुविधा का अधिक विकास हुआ है तो विदर्भ व मराठवाडा क्षेत्र में अल्प सिंचाई सुविधा उपलब्ध है।

महाराष्ट्र मे कुल 6 प्रमुख प्रशासकीय विभाग है। जिसमें अमरावती व नागपूर विभाग विदर्भ में आते है। इसमें से पूर्व विदर्भ में नागपूर, वर्धा, चंद्रपुर, भंडारा, गोंदिया, गडचिरोली इन जिलों का समावेश होता है तो पश्चिम विदर्भ में अमरावती, यवतमाळ, अकोला, बुलढाना, वाशिम जिलों का समावेश होता है। पूर्व विदर्भ में सिंचाई के विविध साधन है जिसमें तलाव, कुआ, नदी, नालाकूप, बांध, नहर आदि के द्वारा सिंचाई की जाती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संशोधन पध्दती :

संशोधन कार्य द्वितीय समंकरे पद आधारित है। इसलिए विविध शोधपत्रिका, पुस्तके, समाचार पत्र व इंटरनेट से विविध जानकारी प्राप्त की गयी है। उसी आधार पर यह शोध निबंध तयार किया गया है।

संशोधन के उद्देश :

1) कृषि क्षेत्र के विकास में जलसिंचन व्यवस्था का महत्व जानना।

2) जिला निहाय जलसिंचाई सुविधा का अध्ययन करना व निष्कर्ष निकालना।

3) जिला स्तर पर कार्यशील विविध प्रकल्पो की जानकारी हासिल करना।

4) विदर्भ मे जिलास्तर पर सिंचाई के साधन की उपलब्धता के बारे में जानना।

राज्य में सिचांई के साधन :

राज्य में जल सिंचाई के लिए मुख्यतः कुंआ, तालाब, नहर, नदी, बांध, कूपनलिका इत्यादी स्त्रोतों का उपयोग किया जाता है। चंद्रपुर तथा नागपुर जिले में कुॅआ से सिंचाई का कार्य 5 से 13 प्रतिशत तक किया जाता है। उपसा सिंचन पध्दती में बिजली या डिझेलपंप के माध्यम से नीचे गहरे भाग से पानी उंचे स्थान पर चले जाया जाता है। विदर्भ में मुख्यतरु तुषात सिंचन व ठिबक सिंचन का भी उपयोग किया जाता है।

राज्य में जल सिंचाई – सुविधा का क्षेत्र

अ.क्र.	*सिंचाई के साधान*	*कुल प्रतिशत*
1	*कुॅआ*	*50*
2	*तलाब*	*16*
3	*निजी नहर (कालवे)*	*09*
4	*सरकारी नहर (कालवे)*	*21*
5	*अन्य स्त्रोत*	*04*

महाराष्ट्र में सिंचाई के लिए सबसे अधिक कुॅआ का उपयोग किया जाता है। अहमदनगर, पूणे, नाशिक इन जिलों में बडे पैमाने पर जल सिंचाई कुॅआ के द्वारा की जाती है।

पूर्व विदर्भ में परंपरागत साधन के रूप में सिंचाई के लिए तलाव का प्रचंड रूपसे उपयोग किया जाता है। विदर्भ में 80 प्रतिशत सिंचाई का कार्य केवल तालाब के द्वारा किया जाता है। प्रमुखतः पूर्व विदर्भ में चंद्रपुर, भंडारा, गोंदिया, गडचिरोली, जिलेमे धान की फसल के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है। इसलिए तालाब का अधिक उपयोग किया जाता है। इसमें ब्रिटिश शासन काल के मालजुगार तालाब द्वारा अधिकांश क्षेत्र को सिचिंत किया जाता है। चंद्रपुर जिले में कुल 3577 तळे, भंडारा में 3238 व नागपूर में 175 तळे है। इन तालाब से तकरीबन 250 हेक्टर से ज्यादा जमीन को सिचिंत करने की क्षमता है।

पश्चिम विदर्भ मे कुॅओ द्वारा ज्यादा से ज्यादा सिंचाई के कार्य किये जाते है। इसमें खेती के लिए पानी की अपूर्ण उपलब्धता ध्यान में रखकर ठिबंक सिंचन व तुषार सिंचन इस आधुनिक साधनो का बडे पैमाने पर उपयोग किया जाता है। जलसिंचन के क्षेत्र में यह एक आधुनिक क्रांती मानी जायेगी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अ.क्र.	प्रमुख जल सिंचन योजना	जिला
1	तापी योजना	अमरावती
2	खडक पूर्णा, जळगांव, हातनूर, तकगंगा	बुलढाणा
3	वाण योजना	अकोला – वाशिम
4	पैनगंगा, पूस, बैबला, अरूणवती, लोअर पैनगंगा	यवतमाळ
5	रामटेक, लोअर वेणा पेंच	नागपूर
6	अप्पर वर्धा, लोअर वर्धा	वर्धा
7	बावनथडी, इटियाडोह बाध, धापेवाडा, गोसी	भंडारा – गोंदिया
8	अंधारी, हूमन, असोलामेढ़ा	चंद्रपूर
9	तुकतुकी, बत्ती	गड़चिरोली

विदर्भ में लघु व मध्यम प्रकल्प की योजना से सिंचाई के क्षेत्र में काफी सहायता मिली है। जिसके द्वारा खरीप व रब्बी दो फसले ली जाती है। विदर्भ में सिंचाई के लिए विदर्भ पाटबंधारे विकास महामंडळ की स्थापना मार्च 1997 में की गयी। इसमें समाविष्ट पाटबंधारे इनकी कुल संख्या 97 है। इन प्रकल्पों के विकास के लिए कुल निधी 7630 करोड रूपये की है। इन प्रकल्प के द्वारा विदर्भ में कुल सिंचाई क्षमता 11 लाख हेक्टर भूमि रखी गयी है।

विदर्भ में जिलानिहाय सिंचन व्यवस्था :

महाराष्ट्र राज्य के अंतर्गत विदर्भ भूक्षेत्र पिछडा व अविकसित दिखलायी देना है। विदर्भ में ग्यारह जिलो का समावेश होता है। जहॉ सिंचन व्यवस्था में काफी असमानता दिखलायी देती है। इसमें नागपूर, वर्धा, अमरावती, अकोला, वाशिम, बुलढाणा, यवतमाल, चंद्रपुर, गडचिरोली, भंडारा व गोंदिया जिले आते है। विदर्भ क्षेत्र कृषि, वनसंपदा एंव खनिज से समृध्द है। फिरभी सिंचाई की सुविधा यहॉ अत्यंत अल्प प्रमाण में दिखलायी देती है। विदर्भ में मशागत (लागवडी) क्षेत्र तथा सिंचन क्षेत्र का प्रतिशत प्रमाण निम्न तालिका में दर्शाया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(लागवडी) मशागत क्षेत्र व सिंच क्षेत्र

अ. क्र.	*जिला*	*भौगोलिक क्षेत्र हेक्टर (लाख)*	*मशागत क्षेत्र हेक्टर (लाख)*	*सिंचन क्षमता क्षेत्र हेक्टर (लाख)*	*प्रतिशत प्रमाण मशागत क्षेत्र का सिंचन क्षेत्र से*
1	*अमरावती*	*12.25*	*7.86*	*1.19*	*15.14:*
2	*अकोला*	*5.43*	*4.80*	*0.60*	*12.50:*
3	*बुलढाणा*	*9.68*	*7.33*	*1.04*	*14.19:*
4	*वाशिम*	*5.15*	*4.30*	*0.55*	*12.79:*
5	*यवतमाल*	*13.59*	*8.87*	*1.64*	*18.49:*
6	*नागपूर*	*10.81*	*6.42*	*2.02*	*31.46:*
7	*वर्धा*	*6.31*	*4.71*	*0.94*	*19.96:*
8	*भंडारा*	*3.89*	*2.27*	*1.15*	*60.03:*
9	*गोंदिया*	*5.43*	*2.39*	*1.65*	*60.03:*
10	*चंद्रपुर*	*11.42*	*5.81*	*1.27*	*21.86:*
11	*गडचिरोली*	*14.48*	*2.70*	*0.71*	*26.30:*
	कुल विदर्भ	***97.43***	***57.46***	***12.76***	***22.21:***

स्त्रोत : महाराष्ट्र शासन जलसंपदा विभाग

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि विदर्भ मे कृषि के लिए सिंचाई की व्यवस्था 22.21: है। जो की महाराष्ट्र राज्य की तुलना मे काफी कम है। गोंदिया व भंडारा जिलो को छोड दिया जाये तो अन्य जिलों में सिंचाई की सुविधा औसत से कम दिखलायी देती है। अमरावती व नागपूर विभाग में सिंचाई की सुविधा में काफी असमानता दिखलायी देती है। जिला निहाय सिंचाई की सुविधा का विस्तुत वर्णन निम्न रूप से किया गया है।

1) नागपूर जिला – *नागपूर जिले का कुल क्षेत्रफल 1892 चौ.कि.मी. है। जो कि महाराष्ट्र राज्य का 3.22 प्रतिशत है। नागपूर जिले में कुल 14 तहसील तथा 5 प्रशासकीय उपविभाग है। 2001 की जनगणना के आधार के अनुसार नागपूर जिले में कुल 29 शहर तथा 1869 गॉव है। जिले में वर्धा, वैनगंगा, जाम व वैन कन्हान, कोसार, पेंच का नाम कुल 8 नदी व उपनदी है।*

जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्र 986 हजार हेक्टर है। जिसमे से 66.5 प्रतिशत क्षेत्र पर खेती की जाती है। 5.58 प्रतिशत क्षेत्र पशु चरागाह का क्षेत्र है। इसमें 12.25 प्रतिशत कृषि अयोग्य भूमि है। नागपूर जिले में कृषि उत्पादन बढाने तथा दूसरी फसल लेने के लिए कुँआ, छोटे व मध्यम प्रकल्प, उपसा सिंचन योजना द्वारा नदी नाले पर पंप लगाकर सिंचाई का कार्य किया जाता है। 2000 – 01 में कुल खेती के क्षेत्रफल का 21.84 प्रतिशत हेक्टर क्षेत्र सिंचित क्षेत्र था। 2000 – 01 में जिले में सिंचाई के लिए कुल कुँओं की संख्या 54318 थी। जिसमें से 43687 कुँओ का उपयोग बाग – बगीचे के लिए किया गया।

विविध फसलो के लिए सिंचाई सुविधा :

नागपुर जिले में 2000 – 01 में कुलसिचिंत क्षेत्र 108988 हेक्टर था। जिसमें कुँओ के द्वारा 60323 हेक्टर तथा तालाब व नहर के माध्यम से 48665 हेक्टर क्षेत्र में सिंचाई की गयी। नागपुर जिले में बडे, मध्यम व लघु प्रकल्प की सहायता से 422059 हेक्टर भूमि को सिंचाई का लाभ प्राप्त हुआ है। 2007 – 08 में पूरे वर्ष सिंचन क्षेत्र 2338 हेक्टर तथा मौसमी क्षेत्र 197895 हेक्टर भूमि थी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नागपूर जिले मे सिंचाई के साधन :

1) ***कुँआ :*** *नागपुर जिले में कुल 54318 सिचिंत कुँओ की संख्या है। जिसमे से 1765 कुँओ पर डिझल पंप तथा 37698 कुँओ पर विद्युत पंप लगाये गये है। जिन कुँओं का उपयोग सिंचाई कार्य मे नही किया जाता उनकी संख्या 10631 है।*

2) ***कूप नलिका – हाथपंप व विद्युतपंप :*** *नागपुर जिले में कुल कूपनलिका की संख्या 287 है। जिसमें हाथपंप 205 तथा विद्युत पंप 82 पर लगाये गये है। चालु हाथपंप की संख्या 9695 तथा चालु, विद्युत पंप की संख्या 558 है।*

3) ***बडे – मध्यम व लघु प्रकल्प :*** *नागपुर जिले में नवेगांव खैरी के पास पेंच नदी पर बडे प्रकल्प के रूप में पेंच तथा लोअर वेणी सिंचाई योजना है। मध्यम प्रकल्प वेणा, पांढराबोडी, चंद्रभागा, उमर्रा, केसर, नाला, मकर धोकडा, कानोली, मोरधाम कोलार खेकरा, सायकी, जामनदी आदि सिंचाई योजना है। लघु पाटबंधारे स्थानीय स्तर पर 80 है। इस प्रकार आज जिले में बडे पैमाने पर जल–सिंचन, विद्युत निर्मिती व पेयजल सुविधा उपलब्ध है। जिले के विकास मे इस क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।*

नागपूर जिले में जलसिंचन योजन तीसरी पंचवार्षीक योजना से शुरू हुई। 1958 – 59 में 4358. 74 हेक्टर क्षेत्र में जलसिंचन की सुविधा उपलब्ध थी। उस समय जिले में 20097 कुँऐ उपलब्ध थे। जिसके द्वारा 13401.85 हेक्टर क्षेत्र में जलसिंचन किया जाता था। नागपूर में तेलंगखेडी तलाव से शासकीय कृषि महाविद्यालय प्रक्षेत्र व तेलंगखेडी उद्यान की कुल 35.52 हेक्टर क्षेत्र में सिंचाई होती थी। खिंडसी (रामटेक) तलाब द्वारा 6475 हेक्टर क्षेत्र में जलसिंचन होता हैं। पंचवार्षिक योजना के अंतर्गत जिले में शुरू किये जलसिंचन प्रकल्प का विवरण इस प्रकार हैं।

पंचवार्षिक योजना निहाय पाटबंधारे प्रकल्प से सिंचन क्षमता का विवरण

अ. क्र.	*कालावधि*	*बडे प्रकल्प*	*मध्यम प्रकल्प*	*लघु पाटबंधारे स्था.स्तर*	*उपसा*	*कुल सिंचाई*
1	*प्रथम योजना (1951 – 56)*	*–*	*–*	*–*	*–*	*–*
2	*दुसरी योजना (1956 – 61)*	*–*	*–*	*–*	*–*	*–*
3	*तीसरी योजना*	*–*	*02*	*02*	*–*	*04, 3059 हे.*
4	*तीन वर्षीय वार्षिक योजना (1966–67, 68, 69)*	*–*	*–*	*01*	*–*	*01 (392 हे.)*
5	*चौथी योजना (1969–74)*	*पेंच (01) (83076 हे.)*				
6	*पॉचवी योजना (1974–78)*	*–*	*02 7610 हे.*	*09 3561 हे.*	*–*	*11 11171 हे.*
7	*दो वार्षिक योजना (1978–79, 80)*	*लोअर वेणा 01 7627 हे.*	*01 1315 हे.*	*02 1465 हे.*	*–*	*04 10406 हे.*

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

8	छठी योजना (1980 – 85)	–	02 11356 हे.	13 4561 हे.	–	15 15917 हे.
9	सातवी योजना (1985 – 90)	–	–	05 569 हे.	–	05 569 हे.
10	दो वार्षिक योजना (1990–91, 92)	–	–	01 254 हे.	–	01 254 हे.
11	आठवी योजना (1992 – 97)	–	02 8359 हे.	14 12435 हे.	–	16 20793
12	नौवी योजना (1997 – 2002)					
13	दसवी योजना (2002 – 07)					

स्त्रोत : सर्व पाटबंधारे योजनांची प्रगती व सद्यः स्थिती दर्शानेवाला जिल्हा पुस्तिका, नागपूर जिला जून 2000 पाटबंधारे विभाग महाराष्ट्र शासन नागपूर.

2) वर्धा जिला : वर्धा जिल्हा स्वंतत्रता सेनानी और संत महात्माओं की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि रही हैं। वर्धा जिले में वर्धा, आष्टी, कांरजा, आर्वी, सेलू, देवळी, हिंगणघाट एवं समुद्रपुर आठ तहसीलों का समावेश है। वर्धा जिले में जलसिंचन का कार्य कुँओं द्वारा (विहिरी) होता है। 1890 में 1210 सिंचन कुओ थी। दूसरी पंचवार्षिक योजना में प्रथम बोर प्रकल्प की शुरूवात की गई। 1985 – 86 में 75.33 प्रतिशत कुँओ द्वारा जलसिंचन होता था। कुँओ की संख्या 33085 थी। वर्धा जिले में जल सिंचन प्रकल्प का विवरण सारणी द्वारा दर्शाया हैं।

अ.क्र.	प्रकल्प	कुल जलसिंचन
1	लोअर वर्धा प्रकल्प	52980 हे.
2	अप्पर वर्धा प्रकल्प	17600 हे.
3	लोअर वेणा प्रकल्प	14024 हे.
4	बोर प्रकल्प	17634 हे.
5	धाम प्रकल्प	10210 हे.
6	पोथरा नही प्रकल्प	11632 हे.
7	पंचधारा प्रकल्प	2460 हे.
8	डोंगरगांव प्रकल्प	730 हे.
9	लघु सिंचन योजना	7389 हे.

स्त्रोत : ॲग्रिकल्चरल सेन्सस (कृषि विभाग, महाराष्ट्र शासन 1996–97)

3) चंद्रपुर जिला – विदर्भ में चंद्रपुर व गडचिरोली ये दोनो जिले अति दुर्गम पिछडे माने जाते है। चंद्रपुर जिले में 15 तहसील आती है। जिसे गोंडपिपरी, ब्रम्हपुरी, वरोरा, चंद्रपुर, राजुरा, भद्रावती, चिमुर, नागभीड, मूल, सिंदेवाही, बल्लापुर, पोभुर्णा, घुघुस, कोरपना, जिवनी आदि है। इस जिले का क्षेत्रफल 10695 चौ.कि.मी. है। चंद्रपुर, घुघुस व मूल इन औद्योगिक क्षेत्र में कोयला, सीमेंट, पेपर मिल प्रमुख उद्योग है। चंद्रपुर जिले में 5345 चौ.कि.मी. का वनक्षेत्र है। ताडोंबा व्याघ्र प्रकल्प चंद्रपुर जिले में होकर भी वहॉ के किसानों का विकास नही हुआ है। चंद्रपुर जिले में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निम्न, सीमांतिक व अल्पभू–धारक किसानों की संख्या ज्यादा है। इस जिलें मे ज्वारी, कपास, गेहूं, हल्दी, सोयाबीन प्रमुख फसल है। 1150 से 1450 कि.मी. वर्षा होती है तथा तापमान 48^{0}ब से 07^{0}ब तक रहता है। जिले में वर्धा, वैनगंगा, पैनगंगा मुख्य नदियॉ है। तो अंधारी, मूल, इरई उपनदीयॉ है। जिले में नलेश्वर (सिंदेवाही) आसोला मेंढा (सावली), चारगांव, चंदईनाला, लगान सराड (वरोरा) अमलनाला (राजुरा) घोडाझरी (नागभीड) कसरला, गडमौसी व ताडोबा है। आंधारी, डोगरगांव तालाबों पर सिंचाई प्रकल्प बना है।

चंद्रपुर जिले के प्रकल्प

अ. क्र.	*प्रकल्प का आकार*	*पूर्ण बने प्रकल्प*	*निर्माणाधिन प्रकल्प*	*प्रशासकीय परंतु अनुदान प्राप्त नही*	*भविष्य कालीन प्रकल्प*
1	*बडे प्रकल्प*	*–*	*–*	*28750*	*–*
2	*मध्यम प्रकल्प*	*30473*	*2300*	*32124*	*–*
3	*लघु पाटबंधारे*	*7745*	*149*	*2325*	*5492*
4	*उपसा सिचंन*	*7614*	*–*	*627*	*6649*
5	*कोल्हापुरी बंधारे*	*19712*	*200*	*1587*	*8552*
6	*वळवणीबंधारे*	*–*	*–*	*–*	*–*
7	*मालगुजार तालाव*	*44790*	*–*	*–*	*–*
	कुल	***110334***	***2649***	***65413***	***20693***

स्त्रोत : *महाराष्ट्र शासन जलसंपदा विभाग*

उपाय योजना :

विदर्भ मे जल सिंचन की समस्या तात्कालिन स्वरूप की न होकर वह स्थायी स्वरूप की बनती जा रही है। कुछ जिलों को छोड कर बाकी सर्वत्र पेयजाल का अभाव सिंचाई सुविधा का अभाव, बडे व मध्यम प्रकल्प था अभाव, तालाबो की संख्या नगण्य दिखलायी देती है।

जल सिंचाई की समस्या को हल करने के लिए कुछ स्थायी उपाय करने होगें। जो इस प्रकार है।

1) *पुराने कुँओ की मरम्मत की जाये ताकि इस परंपरागत साधन का उपयोग खेती कार्य के लिए किया जा सके।*
2) *राज्य में पानी पुरवठा योजना की जो क्षमता है उसका पूरा पूरा उपयोग किया जाये। वर्तमान में 40 से 45 प्रतिशत तक उसका उपयोग किया जाता है।*
3) *सरकार द्वारा जो प्रकल्प बनाये जाते है उन्हें समय के अंदर पूरा किया जाये ताकि किसान व सरकार दोंनो के लिए लाभदायी बन सके।*
4) *जल के उपयोग के लिए उचित प्रशिक्षण व कार्यशाला का आयोजन ग्रामीण स्तर पर किया जाये ताकि किसान पानी के महत्व को समझ सके।*
5) *खेत मे छोटे तालाब बनाने का कार्य विश्वनीयता के साथ किया जाये। किसानो को इसके लिए अनुदान उपलब्ध कराया जाये ताकि वह खेत में छोटे तालाब बनाकर बरसात का पानी संचित करके वर्षभर उसका उपयोग कर सके।*

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

6) *भूगर्भ जाल स्तर को बढ़ाने के लिए विविध उपाय किये जाये जैसे पत्थर को चीरकर कृत्रिम रूप से पानी का प्रवाह किया जाये, वृक्षारोपन किया जाये, ढलान पर मिट्टी के बंधारे बनाने का कार्य किया जाये।*

7) *विदर्भ व मराठवाडा क्षेत्र मे जलसिंचन का बहुतसारा अनुशेष बाकी है उसे सरकार पूर्ण करने का कार्य शीघ्रता से करे। इस ओर जनप्रतिनिधी ने भी अपना ध्यान केंद्रींत करना चाहिए।*

निष्कर्ष :

विदर्भ में कुछ जिलों में सिंचन व्यवस्था पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। विशेषकर धान (चावल) उत्पादन क्षेत्र में सिंचाई सुविधा का पूरा–पूरा उपयोग किया गया है। विदर्भ में मध्यम प्रकल्प की संख्या अधिक है। इन मध्यम प्रकल्पो का उपयोग खेती कार्य में अधिक किया जा रहा है। जिससे कृषि उत्पादकता में वृध्दि हुई है। विविध जिलों में सिंचाई सुविधा का पूरा उपयोग नही होते दिखालायी देना है। 40 प्रतिशत तक प्रकल्पीक सिंचन क्षमता का उपयोग नही किया जाता है। गोंदिया, भंडारा, चंद्रपुर जिला धान उत्पादक क्षेत्र होने से यहॉ सिंचन व्यवस्था का अधिक महत्व है। जिले में बडे, मध्यम व लघु प्रकल्प उपलब्ध सिंचन सुविधा खेती का स्वरूप बदल सकती है। परंतु यह तभी संभव है जब सिंचाई सुविधा का उचित व पूरा–पूरा उपयोग किया जाये। जिला निहाय अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि सिंचाई सुविधा में काफी असमानता दिखलायी देती है। इस विष्मता को दूर करके पूरे विदर्भ व महाराष्ट्र में सिंचाई का सर्वसमावेश व संतुलित विकास करना होता।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ :

1	Mishra S.K. and Puri V.K.	Indian Economy, Himalaya Publishing House, Mumbai, June 1998
2	रूद दत्ता व के.पी.एस.सुन्दरम	भारतीय अर्थव्यवस्था, एस चान्द एण्ड कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली.
3	योजना मासिक	जून, अगस्त, 2015 जुलाई 2015
4	कृषी सांख्यिकी विषयक जिल्हा निहाय माहिती	महाराष्ट्र राज्य
5	जिला सामाजिक व आर्थिक	महाराष्ट्र शासन, अर्थ व सांख्यिकी संचालनालय, मुंबई
6	वैद्य एन.बी.	विदर्भाची अर्थव्यवस्था, मंगेश प्रकाशन 23 नवी रामदास पेठ, तरूण भारत जवळ, नागपुर 440010
7	दास्ताने संतोष	महराष्ट्र 2006 दास्ताने रामचंद्र आणि कं. पूणे 411030
8	मासिक लोकराज्य	
9	नागपुर जिल्हा गॅझटीयर	खंड – 1 व खंड – 2
10	समाचार पत्र	दैनिक तरूण भारत, दैनिक देशान्नती, लोकसत्ता